SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.24

जनजातीय समाज पर आधुनिकता के प्रभाव को कम करने में नशे की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुधीर कुमार[1] और डॉ० अंजली अग्रवाल[2]
[1]शोधार्थी ,समाजशास्त्र विभाग,महिला स्नातकोतर महाविद्यालय बहराइच (उ०प्र०)
[2]शोध निर्देशिका,प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग,महिला स्नातकोतर महाविद्यालय बहराइच (उ०प्र०

सारांश :

आधुनिक युग में सामाजीक एवं सांस्कृतिक प्रगति के साथ – साथ जनजातीय समुदायों में कुछ सामाजिक समस्याओं में वृद्धि हुई है। विगत कुछ दसकों में समाज में मादक पदार्थों के सेवन के प्रवृति में वृद्धि हुई है। मादक पदार्थ ऐसे पदार्थ को कहा जाता है, जिसके सेवन से व्यक्ति को नशे का अनुभव होता है तथा लगतार नशा का सेवन करने से व्यक्ति उसका आदी बन जाता है।मादक पदार्थों के अत्यधिक सेवन के वजह से व्यक्ति व्यसन का शिकार हो जाता है।व्यसन का अभिप्राय शरीर संचालन के लिए मादक पदार्थों का नियमित प्रयोग करना है, इस स्थिति में व्यक्ति नशे का इतना आदी हो जाता है,कि नशा किये बिना शरीर को अपने नियंत्रण में नहीं रख पता है।इस अवस्था में मादक पदार्थों के सेवन न करने पर व्यसनी के हाथ-पैर कापने लगते है, घबराहट होने लगती है,तथा मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ,आज इस आधुनिक युग में जनजातीय संस्कृति पर भी मादक पदार्थों के दुष्प्रभावों को आसानी से देखा जा सकता है। जनजातियां आदि काल से विकाश की मुख्य धारा से कटी हुई थीं। लेकिन विगत कुछ दशकों में शिक्षा के प्रसार व सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप जनजातीय संस्कृति में आधुनिकता झलकने लगी थी। जनजातीय समुदायों में मादक पदार्थों के पारम्परिक सेवन की वजह से आज वर्तमान आधुनिक युग में जनजातीय संस्कृति अपने प्रगति के चर्मावस्था को प्राप्त नही कर पा रही है। इस लिए प्रस्तुत शोध-पत्र में जनजातीय संस्कृति पर मादक पदार्थों के उपयोग के फलस्वरूप पड़ने वाले प्रभाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

***मुख्य शब्द** :- आधुनिकता , मादक पदार्थ , जनजातीय संस्कृति , नशाखोरी ।*

प्रस्तावना :

अधुनिकता के प्रभाव ने समस्त मानव समाजों को प्रभावित किया है। आधुनिक परिवेश में नित नए अभिषकारों के फलस्वरूप आज मानव प्रकृति पर नियंत्रण स्थपित करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन आज भी कुछ ऐसे जनसमूह देखने को मिलते है जिनमे आधुनिकता को स्वीकार करने की प्रवृति बहुत कम पाई जाती है, ऐसे ही जन समूह को हम जनजाति के नाम से जानते है। जनजाति और आदिवासी शब्द एक दुसरे के प्रयवाची के रूप में स्वीकार किये जाते है। भारतीय समाज में जनजातियों की संस्कृति अति प्राचीन है, भारत में कुल 532 जनजातियाँ निवास करती है, तथा 2011 के जनगणना के अनुसार इनकी संख्या भारत की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत है। जनजाति का अर्थ है, जो सभ्य समाज से विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है जिनका अपनी संस्कृति तथा रीति-रिवाज है तथा एक निश्चित भू-भाग में निवास करते है। गिलिन एवं गिलिन के अनुसार “ जनजाति स्थानीय

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

समुदायों का एक ऐसा समूह है जो एक सामान्य क्षेत्र में रहता है ,एक सामान्य बोली बोलता है और एक सामान्य संस्कृति का पालन करता है।" वर्तमान समय में भारत में जनजाति की कुल संख्या 10.42 करोड़ से अधिक है। जनजातियों में मादक पदार्थों का उपयोग पारम्परिक ढंग से किया जाता रहा है जनजातियों में किसी भी विशेष अवसर पर जैसे ,विवाह,पूजा,धार्मिक उत्सव इत्यादि पर मादक पदार्थों का उपयोग बहुताय मात्रा में किया जाता है। आधुनिक युग में जहाँ सभ्य समाज विकास के शिखर को छूने के लिए प्रयासरत है वही जनजातीय समाज अपने नशाखोरी की पारम्परिक आदत की वजह से विकास के मार्ग पर सही से आग्रसर नही हो पा रहे है, क्योकि नशा व्यक्ति के विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है,तथा नशाखोरी के पाश में जकड़ने के बाद व्यक्ति शारीरिक , मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है। नशाखोरी एक व्यक्तिगत समस्या नही बल्कि यह एक सामजिक समस्या है। इस लिए जनजातीय समाज को इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए अपनी मदिरा पान एवं अन्य मादक पदार्थों के उपयोग की पुरानी परम्परा को त्यागते हुए,आधुनिक युग में उपलब्ध अवसरों का लाभ उठाते हुए आपना तथा आपने समाज का विकास करना चाहिए।

आधुनिकता :

आधुनिकता अंग्रेजी शब्द मार्डनिटी का हिंदी रुपान्तरण है। आधुनिकता का अर्थ है वर्तमान युग के अनुसार चलना, प्रगतिशील और तार्किक सोच अपनाना और पुरानी रुदियों व अंधविश्वासों से मुक्त हो कर विज्ञान,तकनीक व मानवीय दृष्टिकोण को महत्व देना। आधुनिकता एवं ऐसी विचारधारा की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जीवनशैली में तर्क, विवेक, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निरंतर परिवर्तन को केन्द्र में रखती है। यह विज्ञान प्राद्यौगिकी और सामाजिक बदलाओं के माध्यम से मानव जीवन को बेहतर बनाने की एक निरंतर प्रक्रिया है। आधुनिकता अतीत की परम्पराओं और विचारों को छोड़कर नए विचारों और तरीकों को अपनाने की प्रक्रिया है। संक्षेप में हम कह सकते है,कि आधुनिकता एक ऐसी अवस्था है जहाँ मनुष्य पुरानें बंधनों से मुक्त होकर तर्क और विज्ञान के आधार पर वर्तमान और भविष्य के लिए एक बेहतर जीवनशैली का निर्माण करता है।

मादक पदार्थ :

वे पदार्थ जिनके सेवन से व्यक्ति को नशा या उत्तेजना महसूस होती है , उसे मादक पदार्थ कहा जाता है। जैसे–शराब, गांजा, हेरोइन, कैफीन, तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट, भांग, चरस इत्यादि। मादक पदार्थों का लगातार इस्तेमाल करने से व्यक्ति को उसकी लत लग जाती है जिससे की व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ मादक दवाओं को भी मादक पदार्थों के अन्तर्गत शामिल किया गया है और उन दवाओं के दुरुपियोग के कारण उनपर सरकार द्वारा रोक लगा दिया गया है। मादक पदार्थ के उपयोग के परिणामस्वरूप व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक स्थिति बदल जाती है , जिससे उसे आनन्द या आराम मिलता है, लेकिन इन पदार्थों के नियमित उपयोग से व्यक्ति इनका आदी बन जाता है। तथा इस अवस्था में व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक रूप से नशा पर निर्भर हो जाता है। नशीले पदार्थ न मिलने पर ऐसे व्यक्तियों का दिमाग और शरीर पूर्ण रूप से कार्य नही करता है।

जनजातीय संस्कृति :

जनजाति का अर्थ एक ऐसे मानव समूह से है, जिसकी रीति-रिवाज संस्कृति और व्यहार के तरीके आदिम विशेषताओं से युक्त होते है। जनजातियां सभ्य समाजों की चमक-दमक से दूर किसी दुर्गम या भौगोलिक रूपं से पिछड़े हुए क्षेत्र में जीवन व्यतित करने वाला समुदाय है तथा इसकी सांस्कृतिक विशेषताए भी दुसरे समुदायों से अलग होती है।

पिडिंग्टन के अनुसार," व्यक्तियों के उस समूह को हम जनजाति के रूप में परिभाषित करते है, जो एक सामान्य भाषा बोलते है, एक सामान्य भू-भाग में रहते है तथा समरूप सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रदर्शित करते है।" जनजातियों का जीवन लम्बे समय तक बहुत उपेक्षित रहने के कारण स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342, 365 (भाग A) तथा 388 में ऐसे प्रावधान किए गये है, जिससे की जनजातीय समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

नशाखोरी :

नशाखोरी वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति नशे पर निर्भर हो जाता है, यानी की जब कोई व्यक्ति मादक पदार्थो का उपयोग करने का आदी बन जाता है, तो इसे ही नशाखोरी कहते है। नशाखोरी एक व्यक्तिगत समस्या नही बल्की यह एक गम्भीर सामजिक समस्या है। नशाखोरी के प्रमुख दुष्प्रभाव हमें शारीरिक व मानसिक रोग,दुर्घटनाएं,कार्य क्षमता में कमी,पारिवारिक विघटन,सामाजिक विघटन,निर्धनता,बेकारी,चारित्रिक पतन, भ्रष्टाचार,आत्महत्या आदि के रूप में देखने को मिलता है।वर्तमान समय में भ्रामक विज्ञापनों एवं अत्यधिक आनन्द प्राप्ती के लिए बहुत से लोग नशाखोरी के शिकार हो रहे है। समाज में दिन-प्रतिदिन शराब,गुटखा,तम्बाकू,सिगरेट,भांग,चरस,गांजा,हेरोइन,अफीम आदि मादक पदार्थों का सेवन बढ़ता जा रहा है।भारत में नशाखोरी की समस्या ने अवैध रूप से शराब बनाने को बढ़ावा दिया है।इस तरह नशाखोरी एक गम्भीर सामाजिक समस्या का रूप धारण किए हुए है।

साहित्य समीक्षा :-

डॉ० विनय कुमार वर्मा (2024) द्वारा अपने अध्ययन में बताया गया है, कि विगत दो वर्षो में भारत में नशावृत्ति की आदत में अत्यधिक वृद्धि हुई है।तथा आदिवासी समाज भी इस प्रवृति से अछुता नही है। बीड़ी,सिगरेट,तम्बाकू,भांग जैसे परम्परागत मादक पदार्थों के साथ ही साथ शराब,गांजा,अफीम,चरस,जैसे नशीले पदार्थों के सेवन का प्रचलन तेजी से बढ़ा है।तथा पुरुषों के साथ किशोर व महिलाएं भी इस वृत्ति से ग्रसित है। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि 72 प्रतिशत पुरुष किसी न किसी प्रकार का नशा करते हैं , जब की 28 प्रतिशत महिलाएं भी नशा करती हैं।

प्रमोद कुमार सिंह (2024) द्वारा अपने अध्ययन में बताया गया है,कि 30 वर्षो से अधिक आयु वर्ग के युवकों में नशे के लती होने की प्रवृति अधिक मिलती है। तथा नशे की लत हिन्दू, विशेष कर के अनुसूचित जनजाति के नवयुकों में अधिक पाई गई है। सर्वाधिक युवक मित्र और सहपाठी से प्रेरित होकर नशे की शुरुआत करते है। वही दूसरी तरफ कुछ युवकों में सामाजिक उपेक्षा और सामाजिक छुट के कारण भी नशे की लत पाई गई है।अधिकांश युवकों का मानना है,कि स्वयं की कुसंगति के कारण उनमे नशे की लत पड़ी है।

प्रो ० आर के पाण्डेय (2013) ने अपने अध्ययन में बताया की जनजातीय समाज में मद्यपान सेवन परम्परा व संस्कृति में व्याप्त है,वे स्वयं ही महुआ तथा चावल इत्यादि से शराब व अन्य मादक द्रव्यों को तैयार कर लेते है।जिसका सेवन वे स्वयं भी करते है तथा बेचते भी है।यह उनकी आमदनी का एक जरिया भी है।इन्होने अपने अध्ययन में पाया की जनजातियों का शराब के बिना कोई कार्य या संस्कार नही होता है।उदाहरण के लिए विवाह,जन्म आदि संस्कारों में यहाँ तक की मृत्यु संस्कारों में भी जनजातीय महिला एवं पुरुष मिलकर मादक द्रव्यों का सेवन करते है।इनका सुझाव है,कि वर्तमान समय में जनजातीय स्त्रियों को अपने शिक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा स्वयं के समाज में फैली अनेक बुराइयों,अज्ञानता,रुढिवादिता तथा संकीर्णता को त्याग कर स्वयं आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करना चाहिए।

शोध उद्देश्य :-

- जनजातीय संस्कृति का अध्ययन करना।
- जनजातीय समाज पर नशे के प्रभाव का अध्ययन करना।
- नशे की रोक – थाम के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
- जनजातियों के विकास से सम्बन्धित संचलित सरकारी योजना का अध्ययन करना।
- जनजातीय समाज को नशा के दुसप्रभावों से अवगत कराना।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

शोध प्रक्रियाविधि एवं प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है,जिसमे शोध उद्देश्यों के अनुरूप संकलन प्रदत्तों की गहन व्याख्या एवं उनका विशलेषण किया जा सके।उक्त शोध पूर्णत: द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।शोध पत्र में प्रदत्त संकलन हेतू शोध आलेख,शोध पत्र,जनरल्स,इंटरनेट,वेबसाईट का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त विशलेषण :

उक्त शोध पत्र के लिए द्वितीयक स्रोंतों से प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर उनका विशलेषण इस प्रकार है।

जनजातीय क्षेत्रों के विकास के लिए संचालित सरकारी योजनाएं : -

भारत सरकार के द्वारा जनजातीय क्षत्रों में कई योजनाएं चलाई जा रही है , जिनमें ग्रामीण विकास एवं गरीबी उन्मूलन , शिक्षा तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित कई योजनाएं शामिल है। इनमें से कुछ योजनाएं इस प्रकार है।

धरती आभा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान 2024 : माननीय प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर 2024 को धरती आभा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ किया। इस अभियान में 17 मंत्रालयों द्वारा 25 उपाय शामिल है।इस अभियान का उद्देश्य 63843 गाँवों में बुनियादी ढांचे के अन्तरों को दूर करते हुए स्वास्थ्य,शिक्षा,आंगनबाड़ी सुविधाओं तक लोगों की पहुँच में सुधार करना है।तथा 5 वर्षों में 30 राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों के 549 जिलों और 2911 ब्लाकों में 5 करोड़ से अधिक जनजातियों को अजीविका के अवसर प्रदान करना है।इस अभियान का कुल बजट 79156 करोड़ रूपये है

प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाभियान 2023 : भारत सरकार ने 15नवम्बर 2023 को प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) शुरू किया है,जिसे जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है।लगभग 24000 करोड़ रूपये के लागत वाले इस मिशन का उद्देश्य 3 वर्षों में समयबध्द तरीके से पी वी टी जी परिवारों और बस्तियों को सुरक्षित आवास,स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता,शिक्षा स्वास्थ्य और पोषण तक बेहतर पहुच तथा स्थायी अजीविका के अवसर जैसी बुनियादी सुविधाओं से परिपूर्ण करना है।

प्रधानमंत्री जनजातीय विकास मिशन : जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा जनजातीय विकास मिशन को क्रियान्वित किया जा रहा है,जिसे जनजातीय आजीविका को बढ़ावा देने के लिए दो मौजूदा योजनाओं के विलय के माध्यम से डिजायन किया गया है।इस योजना में चयनित लघु वनोपज(एम एफ पी)के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण और घोषणा करने की परिकल्पना की गई है,और इसके साथ ही इस योजना में सतत संग्रहण , मूल्य संवर्धन,अवसंरचना विकास,लघु वनोपज के ज्ञान आधार का विस्तार और बाजार , सूचना,विकास जैसे अन्य मध्यम और दीर्घकालिक मुद्दों पर भी ध्यान दिया जायेगा।

एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय 2018 : जनजातीय बच्चों को उनके अपने परिवेश में नवोदय विद्यालय के समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए वर्ष 2018-19 में एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय(ई एम आर एस)की शुरुआत की गई थी।नई योजना के अन्तर्गत सरकार ने 440 ई एम आर एस स्थापित करने का निर्णय लिया है। 50 प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जनजाति की आवादी और कम से कम 20000 जनजातीय जनसंख्या वाले प्रत्येक ब्लॉक में एक ई एम आर एस स्थापित होगा।इस तरह मंत्रालय ने देश भर में लगभग 3.5 लाख अनुसूचित जनजाति के छात्रों को लाभान्वित करने के लिए कुल 728 ई एम आर एस स्थापित करने का लक्ष्य रखा है।

जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टी आर आई) को सहायता : जनजातीय मंत्रालय इस योजना के माध्यम से राज्य सरकारों को जहाँ पहले से नए टी आर आई स्थापित नही है वहां उनकी स्थापना करवाने के लिए और मौजूदा टी आर आई के काम काज को सुदृढ़ करने हेतु अनुसंधान प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण तथा समृद्ध जनजातीय विरासत को बढ़ावा देने आदि के प्रति अपने मुख्य जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए सहायता प्रदान करता है।जनजातीय कला और सांस्कृति को संरक्षित करने के लिए अनुसंधान और दस्तावेजीकरण,कला और कलाकृतियों के रखरखाव तथा संरक्षण

जनजातीय संग्रहालयों की स्थपना,जनजातीय त्योहारों के आयोजन आदि के माध्यम से देश भर में जनजातीय संस्कृति और विरासत को रक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां करने के लिए टी आर आई को वितीय सहायता प्रदान की जाती है।इस योजना के अन्तर्गत जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा टी आर आई को 100 प्रतिशत सहायता अनुदान दिया जाता है।

जनजातीय क्षेत्रों में नशा पर नियंत्रण हेतु सरकारी प्रयास :-जनजातीय क्षेत्रों में नशे पर नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा कई उपाय किए गए है, जैसे नशा मुक्त भारत अभियान और राष्ट्रीय कार्य योजना, इन योजनाओं का वर्णन इस प्रकार है।

नशा मुक्त भारत अभियान 2020 : जनजातीय क्षेत्रों में नशे पर नियंत्रण के लिए सरकार ने 2020 में नशा मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की जिसका लक्ष्य नशे की मांग को कम करना है।इसमें 500 से अधिक गैर सरकारी संगठन शामिल हैं जो गाँव- गाँव जा कर जागरूकता फैलाते है।तथा पुनर्वास में मदद करते है,जनजातीय क्षेत्रों में यह अभियान स्थानीय संस्कृति और समुदायों के साथ मिलकर काम करते है,जहां आदिवासी समुदायों के पारम्परिक ज्ञान और वन अधिकारों का भी ध्यान रखा जाता है।

शराब की लत की रोकथाम के लिए सहायता योजना 2008 : सामजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा शराब और मादक पदार्थों के सेवन की रोकथाम और सामजिक सुरक्षा सेवाओं के लिए यह योजना 15 अक्टूबर 2008 को शुरुआत की गई।यह योजना दो केन्द्रीय योजनाओं के विलय के माध्यम से आस्तित्व में आई।शराब और मादक द्रव्यों के सेवन की रोक थाम के लिए योजना,और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में वित्तीय सहायता के लिए सामान्य अनुदान कार्यक्रम।इस योजना का उद्देश्य शराब तथा मादक द्रव्यों के सेवन के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करना है तथा साथ ही क्षतिपूर्ति,प्रेरणा,परामर्श तथा व्यसनियों के लिए पुनर्वास की व्यवस्था करना है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है,कि वर्तमान समय में भारत में जनजातीय समाज में नशाखोरी की स्थिति चिंताजनक है। वैसे तो जनजातियों का मद्यपान एवं मादक पदार्थों के सेवन से पारम्परिक सम्बन्ध रहा है और परम्परागत रूप से ये लोग महुवा से बनी शराब ,ताड़ी,गांजा तथा भांग का उपयोग करते थे मगर वर्तमान समय में जनजातियों के द्वारा गुटखा,सिगरेट,चरस,अफीम तथा हेरोइन जैसे मादक पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है ।जिसके परिणामस्वरूप जनजातीय समाज में आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याएं उतपन्न हो रहीं हैं।सरकार द्वारा किए किये जा रहे तमाम प्रयासों के बावजूद भी आज जनजातीय क्षेत्रों का वांछित विकास नहीं हो पा रहा है।नशाखोरी पर अंकुस लगाने के लिए सरकारी प्रयासों के साथ – साथ स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों को जागरूकता अभियान चलाकर नशा से होने वाले नुकसान को बताना बहुत आवश्यक है,क्योंकि जागरूकता ही जनजातीय समाज को नशाखोरी के इस दलदल से बाहर निकाल सकती है और तब जाकर जनजातीय समाज का शारीरिक,आर्थिक और सामाजिक विकास हो सकेगा।

सन्दर्भ सूची :

1. जोशी,ओमप्रकाश,भारत में सामाजिक परिवर्तन ,रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर,2008
2. शर्मा,राजीव लोचन ,जनजातीय जीवन और संस्कृति ,किताब घर कानपुर,1971
3. अग्रवाल,डॉ गोपाल कृष्ण,भारत में समाज संरचना संगठन एवं परिवर्तन,एस बी पी डी पब्लिसिंग हॉउस आगरा,2022
4. https://www.pib.gov.in/PressRelesePage
5. https://www.india.gov.in>nasha-mukt-bhart-abhiyan
6. वर्मा,डॉ विनय कुमार,गोड जनजाति में नशे की प्रवृति का अध्ययन,इंटरनेशनल जर्नल फार मल्टीडिस्प्लेनरी रिसर्च,वायलूम 6,सितम्बर 2024
7. सिंह,प्रमोद कुमार,युवा वर्ग में बढ़ते नशे के प्रवृति का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन,ज्ञानशौर्यम इंटरनेशनल साइंटिफिक रेफ्रिड रिसर्च जर्नल,वायलूम 7, मई - जून 2024

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

8. पाण्डेय,आर के व सेन गुप्ता,जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन एवं नशा प्रवृति का अध्ययन,रिसर्च जर्नल आँफ हूमैन्टीज एण्ड सोसल साइंस, वायलूम 4,   अप्रैल - जून 2013

Cite this Article:

सुधीर कुमार और डॉ० अंजली अग्रवाल,“ जनजातीय समाज पर आधुनिकता के प्रभाव को कम करने में नशे की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.167-172, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

\

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुधीर कुमार एवं डॉ० अंजली अग्रवाल

For publication of research paper title

जनजातीय समाज पर आधुनिकता के प्रभाव को कम करने में नशे की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.24